

2) fehlerhaft für अभिवर्त्तः बलौघस्याभिवर्धतः *herankommend* R. 6, 16, 49. ततः स कार्मुकी बाणा समरे चाभिवर्धत 7, 21, 39. — Vgl. अभिवृद्धिः. — *caus. stärker* —, *grösser machen, vermehren* AV. 1, 29, 1.3 (vgl. RV. 10, 174, 1. 3, wo das Richtige). स्वकोशम् JĀĀ. 1, 339. भाण्डागारायुधागारं प्रयत्नेनाभिवर्धयेत् MBh. 13, 3239. प्रीतिम् 1, 4795. 3757. 5, 2939. धर्मम् 13, 7590. R. Gorr. 1, 78, 14. *dehnen* Suçr. 1, 38, 7. *grossziehen*: धान्यस्तान्भ्यवर्धयन् R. Gorr. 1, 40, 18.

— सममि *wachsen, zunehmen*: अग्रेस्याहुतस्येव तेजः समभिवर्धते (वर्धत ed. Calc., वर्ततः die neuere Ausg.) HARIV. 13923. — *caus. grösser machen, verstärken, mehren*: कर्षम् MBh. 5, 583. कीर्तिम् R. 2, 90, 21 (99, 37 Gorr.).

— आ 1) act. in der vordorbenen Stelle: एमैनमवृधन्नमृता अमर्त्यं तैत्रं जित्पाय VS. 33, 60, wo es heissen müsste *liessen heranwachsen*; TBa. 2, 4, 6, 7 wird st. dessen *अमन्यन्* gelesen. — 2) med. *heranwachsen* —, *sich heranbilden zu* (acc. oder dat.): भीम आ वावृधे शर्वः RV. 1, 81, 4. आ श्रेत्रेयस्यं जन्तवो द्युमर्दर्थत् कृष्टयः 5, 19, 3. श्रियं चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः 35, 3.

— उद् *emporwachsen, hervorbrechen*: उद्हराग RĀĀ-TAR. 1, 252. vielleicht fehlerhaft für उद्दतः.

— नि *scheinbar* MBh. 4, 1918, wo aber mit der ed. Bomb. *व्यवर्धत* zu lesen ist.

— परि 1) *heranwachsen, wachsen, zunehmen*: राजपुत्रः पर्याप्तं पर्यवर्धत RĀĀ-TAR. 3, 107. सा परिवर्धमाना लब्धोदया चान्द्रमसौव लेखा KUMĀRAS. 1, 25. (डुहिता) परिवर्धते मरु शुचा मुकृदाम् Spr. 931. बलासः Suçr. 1, 152, 16. प्रजावत्सलता पर्याप्ता पर्यवर्धत RĀĀ-TAR. 5, 194. परिवृद्ध *angewachsen, vermehrt* KĀM. NĪTIS. 13, 47. एकोत्तरं^o der Reihe nach um einis *zunehmend* Suçr. 1, 153, 13. *heftig*: राग RAGH. 9, 69. प्रुच् BĀĪG. P. 6, 14, 47. *hoch gestiegen, zu grossem Ansehen gekommen* HARIV. 13807 (die neuere Ausg. त्वय वृद्धः). — 2) fehlerhaft für परिवर्त्तु HARIV. 2188 (die neuere Ausg. richtig वर्तते). एवं च स (महेत्सवः) प्रतिदिनं परिवर्धमानः KATHĀS. 34, 264. — Vgl. परिवृद्ध fg. — *caus. 1) aufziehen, grossziehen*: पा सा बाल्यात्प्रभृत्यस्मान्पर्यवर्धयत MBh. 5, 2956. HARIV. 11077. RAGH. 13, 62. अदितिपरिवर्धितमन्दारवृत्तं ÇĀK. 100, 15. *anschwellen machen*: das Meer RAGH. 13, 3. BHATṬ. 7, 107. — 2) *ergötzen, erfreuen*; mit gen. (!) der Person HARIV. 8804. — 3) fehlerhaft für परिवर्तय् *umwandeln*: सर्वं तत्काञ्चनमयं कालेन परिवर्धितम् MBh. 7, 2160. — Vgl. परिवर्धन fg.

— प्र 1) act. *erheben, ergötzen*: प्र वां स्तोमा गिरौ वर्धन्नश्चिना RV. 8, 8, 22. — 2) med. (ausnahmsweise act.) *heranwachsen, zunehmen, Kraft gewinnen* RV. 2, 22, 2. अग्रे मा त्वं प्रवर्धिष्ठाः MBh. 1, 1244. MĀRK. P. 68, 33. गजमात्रः प्रवर्धये *er wuchs zu der Grösse eines Elefanten an* BĀĪG. P. 3, 13, 19. न मे मन्युः प्रवर्धते MBh. 3, 1072. प्रजा तेजो बलं चतुरायुश्चैव प्रवर्धते M. 4, 42. धर्मः 11, 15. दुःखं भूयश्चापि प्रवर्धते Spr. 4676. RĀĀ-TAR. 3, 127. प्रवर्धमानवैर 6, 343. लोकानुपकृकर्तारः प्रवर्धते महीभुजः *gedeihen* Spr. 2682. पापान्प्रवर्धते दृष्ट्वा कल्याणानवसीदतः MBh. 13, 5945. तदतीव प्रवर्धते (गृहम्) 13, 3222. प्रेह्यिर्वावृधे स्तेभिः *erregt werden* RV. 3, 5, 2. प्रवृद्ध (प्रवृद्धे P. 6, 2, 147) = उच्छ्रित AK. 3, 4, 14, 87. = प्रौढ, एधित 3, 2, 26. H. 1493. = प्रसृत AK. 3, 2, 38. *aufgewachsen* Spr. 4032.

अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धः so v. a. *ausgetragen* RV. 4, 18, 1. प्रवृद्धो दस्यु-
रुभेवत् 8, 66, 3. *gross, hoch*: Indra 1, 33, 3. 165, 9. 8, 6, 33. 12, 8. 82, 5.
वृषभ 85, 2. AV. 4, 26, 2. कृरि MBh. 3, 15645. R. Gorr. 1, 72, 27 (70, 38
SCHL.). 2, 119, 28. मरुदाम् 4, 31, 15. 6, 16, 20. MBh. 3, 15703. प्राकार R.
3, 54, 15. नग 17, 23. शिखर R. SCHL. 2, 36, 10. 5, 16, 29. षृङ्ग 8, 26. VARĀH.
BRH. S. 12, 6. लिङ्ग Suçr. 2, 396, 3. स्तनद्वय KUMĀRAS. 1, 40. तोयदाः *an-*
geschwollen R. 6, 73, 4. श्रेय KUMĀRAS. 3, 6. ऊर्मि RAGH. 5, 61. अम्भः प्र-
लयप्रवृद्धम् 13, 8. सरित् RĀĀ-TAR. 4, 450. 5, 85. *gesteigert, heftig, stark*:
वायु MBh. 4, 1978. पर्सन्य RAGH. 17, 15. धृञ्जिनीरंजिसि 7, 37. अन्नङ्कम्भल
BĀĪG. P. 3, 14, 15. तमस् R. 6, 104, 4. दर्प 1, 14, 43. कोप 3, 72, 2. तृष्णा R.
1, 15. मनोरथ KUMĀRAS. 7, 24. अन्नचन्द्रकान्ति 74. स्नेह KATHĀS. 31, 90.
गर्व RĀĀ-TAR. 6, 142. राग 333. कर्ष BĀĪG. P. 3, 7, 42. भक्ति 14, 47. 10,
86, 28. भाव 4, 31, 28. लोभ 24, 66. निद्रा MBh. 1, 5892. R. 3, 23, 39. 35, 64.
प्रवृद्धनतत्रगणा योः *zahlreich* HARIV. 12545. सान्नाडुपायसंघात इव प्रवृद्धः
RAGH. 14, 11. प्रवृद्धर्षा *viele Schulden habend* RĀĀ-TAR. 6, 16. तितिः ति-
तिपैरिभियालनप्रवृद्धा *blühend gemacht, zur Wohlfahrt gebracht* VARĀH.
BRH. S. 19, 14. *mächtig*: काल BĀĪG. 11, 32. *alt geworden* KATHĀS. 22,
159. वयसा *alt an Jahren* MBh. 1, 3579. — 3) ein Verwechslung mit
प्रवर्त्तु ist wohl in folgenden Stellen anzunehmen: प्रवर्धमानपृतनाः *her-*
anrückend RĀĀ-TAR. 6, 222. धनात्कुलं प्रभवति धनाद्धर्मः प्रवर्धते *geht*
hervor MBh. 12, 226. अग्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनो न प्रवर्धते (प्रजनं न प्र-
वर्तते M. 3, 61). तस्मात्सर्वं प्रवर्धते KĀM. NĪTIS. 4, 56. चित्ते प्रवर्धते तापः
RĀĀ-TAR. 4, 418. सीतास्नेहप्रवृद्धेन वाष्पेण R. 4, 5, 15. प्रवृद्धन्त्यु (v. 1.
प्रवृत्तं) R. 2, 6. प्रवृद्धसत्कार RĀĀ-TAR. 5, 33. प्रवृद्ध R. 4, 9, 82 fehler-
haft für प्रविद्ध, RĀĀ-TAR. 4, 319 für प्रबुद्ध. — Vgl. प्रवृद्धि, अतिप्रवृद्ध
(sehr hoch von Wuchs R. 3, 10, 20. 4, 17, 14), चोदप्रवृद्ध. — *caus. gross-*
ziehen KATHĀS. 61, 271. MĀRK. P. 38, 9. *vergrössern, stärken, mehren*:
कुलवंशम् MBh. 13, 3340. HARIV. 6308. काकिनीम् so v. a. *zulegen* Spr.
3228, v. 1. मृतिम् RV. 8, 6, 32. AV. 2, 6, 2. प्रवर्धयते चन्द्रमा दीर्घमायुः *ver-*
längert Nir. 11, 6. 36. AV. 19, 32, 3. *Jmd erhöhen, zur Wohlfahrt beför-*
dern HARIV. 11272. — Vgl. प्रवर्धक fg.

— अभिप्र *caus. partic.* वर्धितं *gedehnt* Suçr. 2, 149, 12. *in einen blü-*
henden Zustand versetzt: देश MBh. 1, 4350.

— प्रतिप्र, वर्द्ध *verstärkt* (वृत्त die neuere Ausg.) HARIV. 12124.

— संप्र *wachsen, sich verstärken, zunehmen*: श्रोमङ्गलात्प्रभवति प्रा-
गल्भ्यात्संप्रवर्धते Spr. 5087. चवारि संप्रवर्धते आयुर्विद्या यशो बलम्
3531. ज्ञातयः *gedeihen* 3509. वर्द्ध *aufgewachsen, gross geworden* MBh.
3, 10629. 12738. (अब्दैः) स्थाणुदिकसंप्रवृद्धेः *zusammengebällt, ange-*
geschwollen VARĀH. BRH. S. 24, 24. शुक्ते पत्ने संप्रवृद्धे *wachsend, zunehmend*
4, 32. प्रताप *zugenommen, verstärkt* KĀM. NĪTIS. 15, 8. यो विद्यया तपसा
संप्रवृद्धः *reich an Jahren und an Askese* MBh. 1, 3579. — *caus. Jmd zur*
Grösse verhelfen R. 5, 7, 25.

— प्रति s. प्रतिवर्धन्, welches NILAK. durch प्रातिकूल्येन क्दिनी
erklärt.

— वि 1) *heranwachsen, zunehmen, anschwellen, gedeihen*: (मरुतः)
मरुसा वि वावृधुः RV. 5, 59, 6. उर्विया वि वावृधे 1, 141, 5. ऋतेन य ऋत-
ज्ञतो विवावृधे 9, 108, 8. ÇĀNKA. ÇA. 5, 11, 16. द्वादशाहो वैरकेभिर्विर्वर्धते
verlängert werden 13, 14, 10. ĀPAST. beim Schol. zu KĀTJ. ÇA. 1, 3, 18.